27 अक्तूबर 2024
पिन्तेकुस्त के बाद 23वाँ रविवार
धर्म-सुधार रविवार

दूसरा राजा अध्याय 23 वचन 1 से लेकर 9 तक
भजन संहिता अध्याय 81 वचन 1 से लेकर 14 तक
रोमियों अध्याय 11 वचन 1 से लेकर 6 तक
लूका अध्याय 11 वचन 33 से लेकर अंत तक

मुख्य वचन: लूका अध्याय 11 वचन 33 - "कोई मनुष्य दीया जला के तलघर में या पैमाने के नीचे नहीं रखता, परन्तु दीवट पर रखता है कि भीतर आनेवाले उजियाला पाएँ।"

मसीह में प्रिय भाइयों और बहनों, जब हम आज इस धर्म-सुधार रविवार को इकट्ठा होते हैं, हम अपने विश्वास और कलीसिया में हुए धर्म-सुधार के गहन प्रभाव पर मनन करते हैं। यह दिन हमें उन ऐतिहासिक घटनाओं को याद करने के लिए बुलाहट देता है, जिन्होंने कलीसिया में नवीनीकरण और परिवर्तन के आंदोलन को प्रज्वलित किया, जो हमें परमेश्वर के वचन के प्रकाश में अपने स्वयं के जीवन और विश्वास की जांच करने के लिए प्रोत्साहित करता है। धर्म-सुधार केवल एक ऐतिहासिक घटना नहीं थी, बल्कि एक परिवर्तन लाने वाला क्षण था, जिसने हमारे विश्वास के मूल सिद्धांतों पर जोर दिया: यानी अनुग्रह, पवित्रशास्त्र, विश्वास और सभी विश्वासियों का याजकीयपन। जब हम आज अपने पाठों पर विचार करना आरम्भ करते हैं, तो हम पुनर्स्थापना अर्थात् बहाली, परमेश्वर की आज्ञाकारिता के महत्व और एक ऐसे संसार में अपना प्रकाश चमकाने के बुलाहट को उजागर करेंगे, जो अक्सर अंधकार को पसंद करती है। पवित्रशास्त्र के अध्ययन की हमारी आज की यात्रा हमें राजा योशिय्याह के सुधारों से लेकर परमेश्वर की विश्वासयोग्यता पर पौलुस के मनन तक ले जाती है, जो हमारे भीतर के उजियाले के बारे में यीशु की शिक्षा के साथ समाप्त होती है। आइए हम अपने मनों और दिमाग को उन सच्चाइयों के लिए खोलें, जिन्हें आज परमेश्वर ने हमारे लिए रखी हैं।

पहला विचार. आराधना की बहाली (दूसरा राजा अध्याय **23 वचन 1 से लेकर 9 तक**)

हमारा पहला पाठ हमें राजा योशिय्याह के शासनकाल में ले जाता है, जो एक युवा राजा था, जिसने इस्राएल में सच्ची आराधना को बहाल करने का प्रयास किया था। ऐसे समय में जब लोग मूर्ति-पूजा की ओर मुड़ गए थे और यहोवा परमेश्वर के मार्गों को त्याग दिया था, योशिय्याह ने मंदिर को शुद्ध करने और उचित आराधना की बहाली के लिए साहसिक कदम उठाए। वचन 1 और 3 में, हम देखते हैं कि योशिय्याह लोगों को व्यवस्था की पुस्तक सुनने के लिए इकट्ठा कर रहा था, जिसे मंदिर में फिर से खोजा गया था। यहोवा परमेश्वर के वचनों को सुनकर, योशिय्याह बहुत अधिक भावुक हो गया। उसने अपनी प्रजा के पापों की गंभीरता को पहचानते हुए पश्चाताप में अपने वस्त्र फाड़ दिए। उसकी प्रतिक्रिया हमें वापस परमेश्वर के पास ले जाने में परमेश्वर के वचन के महत्व का प्रमाण है। योशिय्याह के सुधारों में विदेशी देवताओं की वेदियों को नष्ट करना और फसह को फिर से स्थापित करना शामिल था, जो इस्राएल के इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना थी, जिसने लोगों को गुलामी से उनके उद्धार की याद दिलाई। उसके काम प्रजा को परमेश्वर की आज्ञाओं के साथ जोड़ते हुए, प्रामाणिक आराधना की गहरी इच्छा को दर्शाते हैं। अपने जीवन में, हमें अक्सर यह मूल्यांकन करने के लिए कहा जाता है कि हमने परमेश्वर की आराधना पर किस बात को प्राथमिकता दी है। क्या हमारे जीवन में कोई भटकाव या मूर्तियाँ हैं, जो हमारे ध्यान को परमेश्वर के साथ हमारे रिश्ते से हटा रही हैं? जिस तरह योशिय्याह अपने लोगों को सच्ची आराधना की ओर वापस लाया, ठीक उसी तरह हमें भी अपने मनों की जाँच करने और बहाली की खोज करने के लिए आमंत्रित किया जाता है। एक आधुनिक उदाहरण पर ध्यान दें: एक कलीसिया जो खुद को घटती हुई

उपस्थिति और अपने सदस्यों के बीच उदासीनता की भावना से जूझता हुआ पाती है। प्रार्थना और मनन के बाद, अगुवों ने आराधना और समुदाय पर नए सिरे से ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता को पहचाना। उन्होंने प्रार्थना, पवित्रशास्त्र को पढ़ने और समुदाय की सेवा पर जोर देने वाली पहलों की एक श्रृंखला शुरू की। समय के साथ, उन्होंने उपस्थिति और आत्मिक उत्साह में एक पुनरुद्धार देखा। जब हम योशिय्याह के सुधारों पर मनन करते हैं, तो हमें खुद से पूछना चाहिए: हम अपने जीवन और समुदायों में प्रामाणिक आराधना को बहाल करने के लिए क्या कदम उठा सकते हैं? हम खुद को परमेश्वर के वचन के साथ कैसे जोड़ सकते हैं और यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि हमारी आराधना सच्ची हो और हमारे विश्वास को दिखा सके?

दूसरा विचार. सुनने और आज्ञापालन की बुलाहट (भजन संहिता अध्याय **81 वचन 1 से लेकर 14 तक**)

भजन 81 परमेश्वर की इच्छा की एक मार्मिक यादगारी है कि उसके लोग सुनें और उसकी आज्ञापालन करें। भजनकार आराधना की बुलाहट के साथ शुरू होता है: "परमेश्वर जो हमारा बल है, उसका गीत आनन्द से गाओ; याकूब के परमेश्वर का जयजयकार करो!" (वचन 1)। आराधना की यह बुलाहट परमेश्वर की विश्वासयोग्यता और लोगों की प्रतिक्रिया पर मनन की धुन को निर्धारित करती है। वचन 8 से 10 में, परमेश्वर सीधे अपने लोगों से बात करता है, उन्हें सुनने का आग्रह करता है: "हे मेरी प्रजा, सुन, मैं तुझे चिता देता हूँ! हे इस्राएल, भला हो कि तू मेरी सुने! तेरे बीच में पराया ईश्वर न हो; और न तू किसी पराए देवता को दण्डवत् करना।" परमेश्वर की इच्छा स्पष्ट है - वह चाहता है कि उसके लोग उन भटकावों और झूठे देवताओं से दूर हो जाएँ, जो उन्हें भटकाते हैं। यह भजन अवज्ञा के परिणामों पर प्रकाश डालता है। जब लोग परमेश्वर की आज्ञाओं को सुनने और उनका पालन करने में विफल रहे, तो उन्होंने अपने विकल्पों के परिणामों का अनुभव किया। परमेश्वर की इच्छा दण्ड़ देने की नहीं बल्कि संबंध बनाने की है – यानी एक ऐसा संबंध बनाने की, जो भरोसे, आज्ञाकारिता और प्रेम पर आधारित हो। हमारे आज के संदर्भ में, हम कितनी बार खुद को संसार के शोर से विचलित पाते हैं? सफलता, आराम और मान्यता पाने की हमारी खोज में, क्या हम पवित्र आत्मा के निर्मल संकेतों को अनदेखा करते हैं? भजनहार की ओर से दी गई बुलाहट आज भी प्रासंगिक है, जो हमें गड़बड़ी के बीच रुकने और परमेश्वर की आवाज को सुनने का आग्रह करता है। एक निजी कहानी पर विचार करते हुए, एक ऐसे समय पर विचार करें जब एक महिला काम और घर पर अपनी जिम्मेदारियों से परेशानी को महसूस करती थी। अपनी व्यस्तता के बावजूद, वह महसूस करती है कि परमेश्वर उसे धीमा होने और प्रार्थना करने और पवित्रशास्त्र को पढ़ने में समय बिताने का आग्रह कर रहा है। अनिच्छा से, वह इस बुलाहट पर ध्यान देती है और अपनी आत्मा में नवीनीकरण और अपनी प्राथमिकताओं में स्पष्टता पाती है। जब हम भजन 81 पर मनन करते हैं, तो हम ऐसे मन को विकसित करें जो परमेश्वर की आवाज को ग्रहण करने के लिए खुला हो, उसके शब्दों को हमारे निर्णयों का मार्गदर्शन करने और हमारे जीवन को आकार देने की अनुमति दे।

तीसरा विचार. परमेश्वर की विश्वासयोग्यता (रोमियों अध्याय **11 वचन 1 से लेकर 6 तक**)

रोमियों 11 में, पौलुस परमेश्वर की विश्वासयोग्यता और उसके बहुत से लोगों, इस्राएल द्वारा सुसमाचार को स्पष्ट रूप से अस्वीकार किए जाने के बीच तनाव से जूझता है। वह प्रश्न करता है: “क्या परमेश्वर ने अपनी प्रजा को त्याग दिया है? कदापि नहीं!” (वचन 1)। पौलुस इस बात पर प्रकाश डालता है कि मनुष्य की अविश्वासयोग्यता के बावजूद परमेश्वर की विश्वासयोग्यता बनी रहती है। एलिय्याह के उदाहरण का उपयोग करते हुए, जिसने अपनी विश्वासयोग्यता में खुद को अकेला महसूस किया, पौलुस हमें आश्वस्त करता है कि परमेश्वर हमेशा एक बचे हुए लोगों को सुरक्षित रखता है। कठिन समय में भी, परमेश्वर काम कर रहा है, वह अपने लोगों को वापस अपने पास खींच रहा है। वचन 5-6 में, पौलुस इस बात पर जोर देता है कि यह अनुग्रह है कि हम अपने कामों से नहीं, बल्कि अनुग्रह से बचाए जाते हैं। यह अनुग्रह परमेश्वर की ओर से एक वरदान है, जो हमें याद दिलाता है कि उसके सामने हमारा खड़ा होना हमारे प्रदर्शन पर आधारित नहीं है, बल्कि उसके न बदलने वाले प्रेम पर

आधारित है। जब हम परमेश्वर की विश्वासयोग्यता पर विचार करते हैं, तो हमें उसकी प्रतिज्ञाओं पर भरोसा करने के लिए बुलाया जाता है। धर्म-सुधार ने कलीसिया को इस अनुग्रह की याद दिलाने और किसी भी धारणा को अस्वीकार करने का प्रयास किया कि हमारा उद्धार मानवीय प्रयास के द्वारा कमाया जा सकता है। यह हमें इस सत्य को अपनाने के लिए आमंत्रित करता है कि हम मसीह के माध्यम से परमेश्वर द्वारा पूरी तरह से स्वीकार किए जाते हैं। एक ऐसे व्यक्ति की कहानी पर विचार करें जो अयोग्यता की भावनाओं को लेकर यह मानते हुए जूझ रहा था कि उसे परमेश्वर का प्रेम कमाना था। बहुत अधिक चिंतन और अध्ययन के बाद, उसे एहसास हुआ कि उसका मूल्य उसके कामों से नहीं बल्कि परमेश्वर के अनुग्रह से निर्धारित होता है। इस प्रकाशन ने परमेश्वर के साथ उसके रिश्ते को बदल दिया, जिससे वह डर के बजाय धन्यवादी मन से जीने लगा। जब हम अपने जीवन में परमेश्वर की विश्वासयोग्यता की सच्चाई को अपनाते हैं, तो हमें धन्यवादी मन के साथ प्रतिक्रिया देनी चाहिए, जिससे उसका अनुग्रह हमारे कामों और दृष्टिकोणों को आकार दे सके।

चौथा विचार. हमारे भीतर का उजियाला (लूका अध्याय **11 वचन 33 से लेकर 36**)

हमारे आज के ठहराए हुए सुसमाचार के पाठ में, यीशु संसार में प्रकाश होने के महत्व के बारे में सिखाता है। वह वचन 33 में कहता है कि, "कोई मनुष्य दीया जला के तलघर में या पैमाने के नीचे नहीं रखता, परन्तु दीवट पर रखता है कि भीतर आनेवाले उजियाला पाएँ।" यीशु इस बात पर जोर देता है कि हमारे जीवन को उसके प्रकाश को दिखाई देना चाहिए, जो हमारे आस-पास के अंधेरे को उजियाला कर देता है। विश्वासियों के रूप में, हमें अक्सर निराशा, विभाजन और भ्रम से चिह्नित संसार में चमकने के लिए बुलाया जाता है। हमारे भीतर का प्रकाश परमेश्वर के अनुग्रह और सच्चाई का प्रमाण है, और इसे छिपाया नहीं जाना चाहिए। वचन 34-36 में, यीशु हमारी आत्मिक दृष्टि को उस प्रकाश से जोड़ता है, जो हमारे पास है। अगर हमारी आँखें स्वस्थ हैं और उस पर केंद्रित हैं, तो हमारा पूरा अस्तित्व प्रकाश से भर जाएगा। हालाँकि, अगर हम भटकावों या पाप को अपनी दृष्टि को धुंधला करने देते हैं, इसलिए हम अंधेरे में रहने का जोखिम उठाते हैं। प्रकाश बनने की यह बुलाहट संसार में हमारी भूमिका की एक शक्तिशाली यादगारी है। हम केवल निष्क्रिय रूप से देखते रहने वाले लोग नहीं हैं, बल्कि परमेश्वर के मिशन में सक्रिय भागीदार हैं। जब हम अपने समुदायों के साथ जुड़ते हैं, तो हमें अपने कामों और शब्दों में मसीह के प्रेम, न्याय और सत्य को दिखाना चाहिए। उस समय को याद करें जब आपने किसी को मुश्किल परिस्थिति में अपना प्रकाश चमकाते हुए देखा हो। शायद यह कोई पड़ोसी था, जिसने जरूरतमंदों की मदद की हो, या कोई मित्र जिसने संघर्ष कर रहे किसी व्यक्ति को प्रोत्साहन के शब्द कहे हों। प्रकाश की ये शब्द गहरा प्रभाव डाल सकते हैं, और दूसरों को मसीह में पाई जाने वाली आशा की ओर आकर्षित कर सकते हैं। जब हम संसार में उजियाला बनने की अपनी बुलाहट को स्वीकार करते हैं, तो आइए हम जलते हुए चमकने के लिए प्रतिबद्ध हों, जिससे परमेश्वर का प्रेम हमारे माध्यम से बह निकले और हमारे आस-पास के लोगों तक पहुँचे।

यहाँ मार्टिन लूथर और धर्म-सुधार में अन्य प्रमुख हस्तियों का एक संक्षिप्त अवलोकन दिया गया है, जिसे आप धर्म-सुधार रविवार को अपने उपदेश में शामिल कर सकते हैं।

मार्टिन लूथर: धर्म-सुधार के उत्प्रेरक

मार्टिन लूथर (1483-1546) एक जर्मन ईश-शास्त्री, मठवासी और प्रोफेसर थे, जिन्हें व्यापक रूप से प्रोटेस्टेंट धर्म-सुधार के उत्प्रेरक के रूप में माना जाता है। धर्म-सुधार की ओर उनकी यात्रा तब शुरू हुई जब उन्होंने उद्धार के विचार और कलीसिया की प्रथाओं के साथ संघर्ष किया। लूथर विशेष रूप से मोचन-पत्रों की बिक्री से परेशान थे - यानी पापों की सजा को कम करने के लिए कलीसिया को दिए जानी वाली रकम से मिलने वाली प्रमाणपत्रों से। 1517 में, उन्होंने कलीसिया के अधिकार को चुनौती देते हुए और बाइबल की शिक्षाओं की वापसी की वकालत करते हुए, विट्टनबर्ग में कैसल चर्च के दरवाजे पर अपने पंचानबे सिद्धांतों को प्रसिद्ध रूप से चिपका दिया। लूथर ने *सोला फिडा* (केवल विश्वास), *सोला ग्राटिया* (केवल अनुग्रह), और *सोला स्क्रिप्चरा* (केवल पवित्रशास्त्र) के

सिद्धांतों पर जोर दिया। उन्होंने तर्क दिया कि उद्धार परमेश्वर से प्राप्त एक वरदान है, जो विश्वास के माध्यम से प्राप्त होता है, न कि यह मानव कामों का परिणाम है। जर्मन में बाइबल के उनके अनुवादों ने पवित्रशास्त्र को आम लोगों के लिए सुलभ बना दिया, जिससे लोगों को स्वयं बाइबल पढ़ने और व्याख्या करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। लूथर के कामों के कारण न केवल उन्हें चर्च से बाहर निकाल दिया वरन् एक ऐसे आंदोलन को भी जन्म दिया जिसने मसीही विश्वास के परिदृश्य को हमेशा के लिए बदल दिया। जब हम धर्म-सुधार रविवार पर विचार करते हैं, हम न केवल मार्टिन लूथर को बल्कि उन कई विश्वासयोग्य पुरुषों और महिलाओं को भी सम्मानित करते हैं, जिन्होंने कलीसिया को उसके बाइबल के आधार पर वापस लाने की कोशिश की। जॉन कैल्विन, हुल्दरिच ज़्विंगली, विलियम टिंडेल, जॉन नॉक्स और यहाँ तक कि देसिदेरियुस इरास्मुस जैसी हस्तियों ने इस बदल देने वाले आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इनमें से प्रत्येक व्यक्ति ने, परमेश्वर की सच्चाई पर अपने दृढ़ विश्वास से प्रेरित होकर, पवित्रशास्त्र से भटकी परंपरा की विचारधारा के विरुद्ध खड़े होने के लिए महत्वपूर्ण जोखिम उठाए। उनके सामूहिक प्रयास हमें याद दिलाते हैं कि विश्वास की यात्रा एक इकलौता मार्ग नहीं है, बल्कि उन लोगों के योगदान से समृद्ध है, जो हमसे पहले इस पर चले हैं। जिस तरह उन्होंने अपने समय में परमेश्वर के वचन की सच्चाइयों को प्रकाशित किया, ठीक उसी तरह हमें उस प्रकाश को अपने संदर्भ में आगे ले जाने के लिए बुलाया गया है। कलीसिया के स्थापित मानदंडों को चुनौती देने में लूथर की हिम्मत एक व्यक्ति के विश्वास में दृढ़ रहने और परमेश्वर के वचन की बदलने वाली सामर्थ्य के महत्व की एक शक्तिशाली याद को दिलाता है।

धर्म-सुधार में अन्य प्रमुख व्यक्ति

पहला. जॉन कैल्विन (1509-1564): एक फ्रांसीसी ईश-शास्त्री और पास्टर, कैल्विन ने धर्म-सुधारित ईश-शास्त्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके लेखन कार्यों में, *इंस्टीट्यूट्स ऑफ द क्रिश्चियन रिलीजन* ने मसीही धर्मसिद्धांत के प्रति उनकी समझ को रेखांकित किया और परमेश्वर की प्रभुता, पवित्रशास्त्र के अधिकार और अनुग्रह की आवश्यकता पर जोर दिया। कैल्विन के विचारों ने कई प्रोटेस्टेंट समुदायों खासकर स्विट्जरलैंड और उसके बाहर को प्रभावित किया।

दूसरा. हुल्ड्रिच ज़्विंगली (1484-1531): लूथर के समकालीन, ज़्विंगली स्विट्जरलैंड में धर्म-सुधार के अगुवा थे। उन्होंने पवित्रशास्त्र की ओर लौटने की वकालत की और कलीसिया की कई परंपराओं को खारिज कर दिया, जिन्हें उन्होंने बाइबल से परे माना। ज़्विंगली का पवित्रशास्त्र के अधिकार पर जोर और यूखारिस्ट अर्थात् प्रभु भोज की उनकी व्याख्या धर्म-सुधारित विचारधारा के विकास के लिए मूल आधार बन गई।

तीसरा. विलियम टिंडेल (1494-1536): एक अंग्रेजी विद्वान और अनुवादक, टिंडेल को नए नियम के अंग्रेजी में अनुवाद के लिए जाना जाता है, जो कि सबसे पहले छपा था। उनके लेखन कार्यों ने किंग जेम्स संस्करण सहित बाद के अंग्रेजी अनुवादों के लिए आधार तैयार किया। टिंडेल को उनके प्रयासों के लिए शहीद कर दिया गया, लेकिन उनके अनुवादों ने पवित्रशास्त्र के पढ़ने को लोकतांत्रिक बनाने और इंग्लैंड में धर्म-सुधार को बढ़ावा देने में मदद की।

चौथा. जॉन नॉक्स (1514-1572): एक स्कॉटिश पास्टर और ईश-शास्त्री, नॉक्स स्कॉटिश धर्म-सुधार में एक अग्रणी व्यक्ति थे। उन्होंने स्कॉटलैंड में प्रेस्बिटेरियन चर्च की स्थापना की और उन सुधारों की वकालत की जो पवित्रशास्त्र के अधिकार और सभी विश्वासियों के याजक होने पर जोर देते थे। नॉक्स के लेखन कार्यों और अगुवाई ने स्कॉटलैंड के धार्मिक परिदृश्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

पाँचवा. देसिदेरियुस इरास्मुस (1466-1536): लूथर या कैल्विन की लकीर पर ही धर्म-सुधार अगुवा नहीं होने पर भी, इरास्मुस एक मानवतावादी विचारधारा वाले व्यक्ति और विद्वान थे, जिनके काम ने धर्म-सुधार के लिए बौद्धिक आधार तैयार किया। उनके द्वारा बनाए यूनानी नये नियम के आलोचनात्मक संस्करण ने पवित्रशास्त्र के अध्ययन को प्रोत्साहित किया और कलीसिया के भीतर धर्म-सुधार की आवश्यकता पर जोर दिया। इरास्मुस ने पवित्रशास्त्र पर आधारित सरल मसीही विश्वास की वापसी का समर्थन किया।

इस सन्देश का सार

जब हम इस धर्म-सुधार रविवार पर अपने मनन को समाप्त करते हैं, हमें पुनर्स्थापना यानी बहाली, आज्ञाकारिता, विश्वासयोग्यता और प्रकाश के महत्वपूर्ण विषयों की याद दिलाई जाती है। जिस तरह राजा योशिय्याह ने सच्ची आराधना को बहाल करने की कोशिश की, ठीक उसी तरह हमें अपने जीवन का मूल्यांकन करने और यह सुनिश्चित करने के लिए बुलाया जाता है कि हमारी आराधना सच्ची हो और परमेश्वर के मन को दिखाए। हमारी आराधना में, हमें परमेश्वर की आवाज सुनने और उसकी ओर से दी जाने वाली बुलाहट का उत्तर देने के महत्व को याद रखना चाहिए। हमें परमेश्वर की विश्वासयोग्यता के आश्वासन में विश्राम करना चाहिए, उसके अनुग्रह पर भरोसा करना चाहिए जो हमें बनाए रखता है। और जब हम संसार में उजियाले के रूप में अपनी पहचान को अपनाते हैं, तो आइए हम अपने आस-पास के लोगों के साथ मसीह की आशा और प्रेम को साझा करते हुए चमकते रहें। जब हम धर्म-सुधार का उत्सव मनाते हैं, तो हो सकता है कि यह हमें अपने विश्वास और अपने समुदायों में नवीनीकरण की खोज जारी रखने, और परमेश्वर के निकट आने और एक ऐसे संसार में उसके प्रकाश को दिखाने के लिए प्रेरित करे, जिसे इसकी बहुत अधिक जरूरत है।

आइए हम प्रार्थना करें

हे स्वर्गीय पिता, हम आपके वचन के वरदान और आपके पुत्र, यीशु मसीह के माध्यम से प्रकट सत्य के लिए आपका धन्यवाद करते हैं। जब हम इस धर्म-सुधार रविवार के पर्व को मनाते हैं, हमें पुनर्स्थापना यानी बहाली, आज्ञाकारिता, विश्वासयोग्यता और प्रकाश के विषयों को अपनाने में मदद करें। हमारी आराधना सच्ची हो, हमारे मन ग्रहणशील हों, और हमारा जीवन आपके प्रेम को दिखाए। हमें अपने समुदायों में चमकने के लिए सशक्त करें, जिससे कि हम दूसरों को आपकी ओर आकर्षित करें। यीशु के नाम में, हम प्रार्थना करते हैं। आमीन।